6

शिक्षण में भाषा की भूमिका

दीपमाला*

आधुनिक जीवन शैली के कारण शिक्षा का क्षेत्र विकसित होता जा रहा है। आधुनिकता ने नयी तकनीक से लैस शिक्षा पद्धति को हर विषय की आवश्यकता बना दिया है, जो कहीं न कहीं हमारे समाज की आवश्यकता भी है। शिक्षा व्यक्ति के लिए वरदान है। एक शिक्षित व्यक्ति अपने समाज का, देश का और राष्ट्र का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने की क्षमता रखता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता सदा से ही रही है जो सर्वमान्य रूप से केंद्रीय राजकाज की भाषा बन सके। शर्मा (2004 एवं 2007) के मतानुसार हिंदी भाषा शासन और संस्कृति की भाषा बन सकती है। उचित शिक्षा जहाँ अच्छे-बुरे का अंतर समझाती है, वहीं जिज्ञासा को भी बढ़ाती है। प्राचीन काल से शिक्षित व्यक्ति का सम्मान होता आया है, एक शिक्षित व्यक्ति की ताकत का एहसास अपने आसपास अनपढ़ व्यक्ति की अवस्था से लगाया जा सकता है। शिक्षित होने के लिए यदि साधनों और संसाधनों की बात की जाए तो यह कहना अनुचित होगा कि आज कोई भी व्यक्ति जो समाज के कमज़ोर वर्ग से ताल्लुक रखता है शिक्षा ग्रहण करने में अक्षम है, क्योंकि आज हमारे देश की सरकारी नीतियों ने इसके अनेक मार्ग खोले हैं, आवश्यकता है तो बस सबके द्वारा इसके महत्त्व को समझने की।

डॉ. रामविलास शर्मा की पुस्तक *भारत की भाषा समस्या* से यह स्पष्ट होता है कि वे शिक्षा और भाषा के प्रति बहुत सजग थे। उन्होंने कहा कि 'भाषा जनता के लिए है, जनता भाषा के लिए नहीं।' अभी तक हम हिंदी को जनता की भाषा कहते आए थे लेकिन जनता का नब्बे फीसदी भाग हमारी इस हिंदी से अपरिचित था। अब समय आ गया है कि नब्बे फीसदी जनता शिक्षित होकर अपनी भाषा को पहचाने, उसका रूप सँवारने में हाथ बटाए। शिक्षा का प्रसार एक ऐसी बाढ़ होगी जो हमारी भाषा और साहित्य के उद्यान पर एक बार छा जाएगी।

शिक्षा के इस प्रसार के लिए अनुभवी शिक्षक की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। एक बार जब व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो जाता है फिर प्रारंभ होती है शिक्षक की भूमिका। प्रोफ़ेसर दिलीप सिंह ने शिक्षक के भाषा और साहित्य के ज्ञान को स्पष्ट करते हुए कहा है कि शिक्षक की सजगता का अर्थ है, यह जानना कि प्रत्येक भाषा

* *सहायक प्रोफ़ेसर,* श्री गुरुनानक देव खालसा कॉलेज, देवनगर, करोल बाग, दिल्ली

अपने अनुभव संसार को अपने ढंग से व्यक्त करती है। भौतिक धरातल पर ये तथ्य भले ही एक हों, किंतु संबोधन के धरातल पर किसी भाषा समाज द्वारा अपनी विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि के कारण ये एक नए संदर्भ में ग्रहण किए जाते हैं। यह विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि देने का काम ही सही मायने मे शिक्षक की पहचान कराता है।

भाषा के अभाव में मनुष्य समाज का अस्तित्व संभव नहीं है। हम भाषा के माध्यम से ही सब काम करते हैं परंतु भाषा के बारे में ज़्यादा नहीं जानते। जिस भाषा का प्रयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं, उसके बारे में जानने और समझने का प्रयत्न नहीं करते। इतना ही नहीं उसके बारे में गलत धारणाएँ भी पाल लेते हैं। प्रो.दिलीप सिंह भाषा के प्रति सजग हैं अतः अपनी पुस्तक *भाषा का संसार* में उन्होंने भाषा से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की है। हिंदी भाषा के शिक्षण के लिए दिए गए उनके सिद्धांत सर्वविदित हैं, वे मानते हैं कि भाषा एक साथ बहुत कुछ है अर्थात् यदि भाषा एक ओर संप्रेषण की बहुमुखी व्यवस्था है तो दूसरी ओर सोचने-विचारने का माध्यम है, तीसरी ओर भाषा ही साहित्यिक सृष्टि का कलात्मक साधन है। चौथी ओर वे भाषा को एक सामाजिक संस्था मानते हैं तो यह भी मानते हैं कि भारत जैसे देश में भाषा राजनीतिक विवाद का सर्वकालिक मुद्दा है। वे ध्यान दिलाते हैं कि भाषा किसी देश को एकता के सूत्र में जोड़ने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व है जो उसके विकास का माध्यम बनता है। लेकिन उन्हें यह बात नहीं सुहाती कि हम भाषा को मिली-मिलाई वस्तु मान लेते हैं। उनका मानना है कि भाषा के प्रति उदासीनता हमारी अपनी भाषाओं के विकास और व्यवहार को अवरुद्ध करती है। अपनी भाषा के प्रति हमारी सजगता और दृष्टि से हमारे पूरे भाषा समाज के विकास पर प्रभाव पड़ता है। इसीलिए वे दृढ़ शब्दों में कहते हैं कि अपनी भाषा के प्रति सकारात्मक और व्यापक दृष्टिकोण अपनाए बिना न तो हमारा सामाजिक विकास संभव है और न ही मानसिक।

शिक्षक सही मायने में वह व्यक्ति होता है जो अपने विद्यार्थी को न केवल अच्छे और बुरे की पहचान कराने में सक्षम हो, बल्कि उसकी बुद्धिमता को समझ कर उसका सर्वांगीण विकास करने का दायित्व भी उठाए। आज का समाज अत्याधुनिक होता जा रहा है, ऐसे में बच्चों का अपनी संस्कृति और नैतिकता से जुड़े रहना बहुत ही मुश्किल हो गया है। ऐसे में शिक्षक ही एकमात्र व्यक्ति है, जो अपनी शिक्षा के माध्यम से बच्चों को वह सब सिखा सकता है जो उनके माता-पिता नहीं सिखा सकते। शिक्षक यदि चाहे तो शुरू से ही अपने विद्यार्थी का आधार ऐसा बना सकता है कि वह जीवनपर्यंत लिखने-पढ़ने में कोई त्रुटि न करें। यदि कोई शिक्षक अपने विद्यार्थी की लिखने और पढ़ने की छोटी-मोटी त्रुटि को नज़रअंदाज करता है तो यह उसकी भूल है क्योंकि महाविद्यालय में पहुँचने पर वह विद्यार्थी वैसा ही गलत उच्चारण और लिखावट की गलतियाँ करता रहता है जो उसे नहीं करनी चाहिए। हिंदी की शिक्षिका रहते हुए मेरा स्वयं का अनुभव है कि बच्चे की यदि बुनियादी तौर पर अशुद्धियों को ठीक कर दिया जाए तो वह आगे चलकर गलती नहीं करता।

आज जब बच्चे किसी वर्ण को ठीक से नहीं लिख पाते, तब एहसास होता है कि इन्हें समय पर किसी शिक्षक या अध्यापिका ने सुधारने का प्रयास

Chapters- PS-July2016.indd 32 22-08-2017 AM 10:01:01

क्यों नहीं किया। अगर हिंदी भाषा की बात करें तो मैं यह कह सकती हूँ कि सौ में से पचास प्रतिशत बच्चे ही शुद्ध लेखन और उच्चारण करने में सक्षम होते हैं। कॉलेज मे पहुँचने के बाद तो इन्हें सुधारना बहुत ही मुश्किल होता है। क्योंकि ज़रा-सा भी कुछ समझाओ तो वे सीधा-सा जवाब देते हैं कि "हम तो ऐसे ही लिखते हैं आजतक किसी ने भी गलत नहीं किया आपने कैसे किया।" या फिर कुछ तो बहुत ही हैरानी से देखते हुए कहते हैं कि हमें तो पता ही नहीं था कि इसे ऐसे लिखते हैं।ज़्यादातर बच्चे अनुस्वार की, और थ, भ और ध लिखने की गलतियाँ करते हैं तो कुछ वाक्य ही गलत तरीके से बनाते हैं। कुछ बच्चे नयी बात को सीखकर खुश होते हैं तो कुछ खीझ जाते हैं।

शिक्षा के हर विषय में ऐसी परेशानियाँ शिक्षकों को हर रोज़ उठानी पड़ती हैं। शिक्षकों से आए दिन ये शब्द सुनने को मिल जाते हैं कि "पता नहीं क्या सीखकर आए हैं ये विद्यालय से।" मेरा मानना है कि यदि शिक्षक बच्चे को उसकी पहली गलती पर ही टोक दे, उसे प्यार से समझा दे, तो शायद वह ठीक से लिखना और बोलना सीख जाएगा।

समाज में रहते हुए कभी-कभी हम शिक्षक वर्ग अपनी व्यस्तताओं के कारण यह भूल जाते हैं कि शिक्षक होने के साथ ही हमारे कर्तव्य और उत्तरदायित्व हमारे विद्यार्थियों के प्रति बहुत ही बढ़ जाते हैं। चाहे हम किसी भी विषय के शिक्षक हों, हमारा कार्य है विद्यार्थियों को निपुण बनाना। अपने ज्ञान की हर बूँद से विद्यार्थियों को लाभान्वित करना।

हिंदी भाषा में विद्यार्थी ज़्यादातर दो तरह से गलतियाँ करते हैं। पहली, मौखिक गलतियाँ और दूसरी, लिखित गलतियाँ।

मौखिक गलतियाँ इस बात पर भी निर्भर करती हैं कि वह किस अंचल या प्रदेश से आया है। आंचलिक भाषा के प्रभाव से शुद्ध उच्चारण करने में कई बार बच्चे असमर्थ होते हैं, जैसे– श को स बोलना या फिर जाता को जाती बोलना, खाता को खाती बोलना, उच्चारण संबंधित गलतियाँ।

उच्चारण संबंधित गलतियों को सुधारने का प्रयास तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब विद्यार्थी को भाषा के माध्यम से ही अपना व्यवसाय चुनना हो जैसे कि पत्रकार, समाचार वाचक, रेडियो जॉकी और शिक्षक इत्यादि। शब्द का सही उच्चारण करने से इस प्रकार की अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है।

लिखित गलतियों के अंतर्गत वर्तनी की सारी अशुद्धियों को रखा जा सकता है जो इस प्रकार हैं —

पञ्चमाक्षर की गलतियाँ

पञ्चमाक्षरों के नियम का सही ज्ञान न होने से बहुधा लोग इनके आधे अक्षरों की जगह अकसर 'न्' का ही गलत प्रयोग करते हैं जैसे — 'पण्डित' के स्थान पर 'पन्डित', 'विण्डोज़' के स्थान पर 'विन्डोज़', 'चञ्चल' के स्थान पर 'चन्चल' आदि। ये अधिकतर अशुद्धियाँ 'ञ्' तथा 'ण्' के स्थान पर 'न्' के प्रयोग की होती हैं।

अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी में लिखने पर होने वाली गलतियाँ ऑ की गलतियाँ

लेखन की गलती — 'ऑ' तथा 'ऍ' ये दोनों आगत ध्वनियाँ कही जाती हैं जो कि हिंदी में विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेज़ी से आयी हैं। इनका उपयोग अंग्रेज़ी की दो विशिष्ट ध्वनियों के लिए होता है। 'ऑ' की ध्वनि 'ओ' तथा 'औ' के लगभग बीच

Chapters- PS-July2016.indd 33 22-08-2017 AM 10:01:01

की है, उदाहरण: बॉस (Boss), हॉट (Hot) आदि। बहुधा लोग सामान्य लेखन में भी तथा कंप्यूटर पर टंकण में भी ॉ' (ऑ की मात्रा) के स्थान पर 'ा' (आ की मात्रा) लिख देते हैं। ऐसा दो कारणों से है — एक तो विदेशी ध्वनियाँ होने से भारतीय कई बार इन्हें आत्मसात नहीं कर पाते और दूसरा, कंप्यूटर पर की-बोर्ड में 'ऑ' (अथवा इसकी मात्रा) का चिह्न सुलभ न होने से। कई बार की-बोर्ड में सुलभ होने पर भी लोग आलस्यवश 'आ' की ही मात्रा लगा देते हैं।

हालाँकि कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके हिंदी में 'आ' वाले रूप भी प्रचलित हैं जैसे डाक्टर (डॉक्टर से बना) तथा कालेज (कॉलेज से बना)। इन मामलों में 'आ' वाला रूप भी चल जाता है क्योंकि इनका 'आ' वाला उच्चारण भी प्रचलित है, यद्यपि 'ऑ' वाला ही लिखना बेहतर है। लेकिन जिन शब्दों के उच्चारण में केवल 'ऑ' की ही ध्वनि हो उन्हें 'आ' रूप में लिखना बिलकुल गलत है। उदाहरण के लिए, इंटरनेट पर 'ब्लॉग' को बहुधा गलत रूप से 'ब्लाग' लिख दिया जाता है यद्यपि 'ब्लाग' बोलता कोई नहीं।

उच्चारण की गलती — चूँकि 'ऑ' विदेशी ध्वनि है इसलिए कई भारतीय इसे आत्मसात् नहीं कर पाते तथा 'ऑ' वाले शब्दों का उच्चारण 'आ' की तरह करते हैं। उदाहरण के लिए, 'ऑल' के स्थान पर 'आल', 'ऑलसो' के स्थान पर 'आलसो', 'बॉडी' के स्थान पर 'बाडी' आदि।

ऍ की गलतियाँ

आगत ध्वनि 'ऍ', 'ए' तथा 'ऐ' के लगभग बीच की है, उदाहरण 'जॅक' (Jack), 'मॅक' (Mac)। हिंदी में आमतौर पर इसके लिए निकटतम वर्ण 'ऐ' का उपयोग कर लिया जाता है जैसे 'जॅक' की बजाय 'जैक' आदि। यह इतना अशुद्ध नहीं लेकिन 'ऍ' की मात्रा के स्थान पर 'ए' की मात्रा का उपयोग सर्वथा अनुचित है तथा देवनागरी का ध्वन्यात्मकता गुण — उच्चारण और लेखन की समरूपता के विरुद्ध है। इस तरह के गलत प्रयोग के उदाहरण हैं 'रॅड' (Red) के स्थान पर 'रेड' लिखना जो कि Raid का सही लेखन है। इसी प्रकार 'टॅस्ट' (Test) के स्थान पर 'टेस्ट' लिखना जो कि Taste का सही लेखन है, 'गॅस्ट' (Guest) के स्थान पर 'गेस्ट' जो कि गलत है।

एक अन्य अशुद्धि जो कि प्रिंट मीडिया में देखने को मिलती है – 'ऍ' के स्थान पर 'अ' के ऊपर ' ॅ' चिह्न लगा वर्ण। ऐसा वर्ण यूनिकोड फॉण्ट में बनाना संभव नहीं है लेकिन नॉन-यूनिकोड फॉण्ट में बन जाता है। ऐसी गलती आम तौर पर 'ऍ' से शुरू होने वाले वर्णों में दिखायी देती है।

अनुस्वार तथा अनुनासिक की गलतियाँ

बहुधा अनुस्वार (ं) के स्थान पर अनुनासिक (ँ) तथा अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लिख दिया जाता है। विशेषकर अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार को लिखे जाने की गलती अधिक प्रचलित है और इसे एक प्रकार की अघोषित स्वीकृति भी मिल गयी है। कुछ उदाहरण हैं, हँसना के स्थान पर हंसना, पंख के स्थान पर पँख आदि।

इन दोनों के अंतर को स्पष्ट करने के लिए बहुधा हँस (हँसना क्रिया वाला) तथा हंस (पक्षी) का उदाहरण दिया जाता है।

Chapters- PS-July2016.indd 34 22-08-2017 AM 10:01:01

नुक्ते की गलतियाँ

उर्दू से हिंदी में लिए गए शब्दों में नुक्ता लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं के कुछ शब्दों में भी नुक्ते का उपयोग होता है। नुक्ता भाषा विशेष की सही ध्वनि को प्रकट करता है लेकिन हिंदी में लिखते समय प्रायः कई बार लोग नुक्ता लोप कर देते हैं। यद्यपि इसे गंभीर गलती नहीं माना जाता। नुक्ता छोड़ देना विशेष नोटिस नहीं किया जाता लेकिन जहाँ नुक्ता न लगना हो वहाँ लगा देना अजीब लगता है जैसे 'फल' के स्थान पर 'फ़ल' तथा 'फिर' के स्थान पर 'फ़िर' सरासर गलत है।

विद्यार्थियों के द्वारा की गई इस प्रकार की अशुद्धियों को बहुत ध्यानपूर्वक ही सुधारा जा सकता है, अन्यथा वे जीवनपर्यंत अशुद्ध लेखन ही करते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वह जितना हो सके वर्तनी की गलतियों को सुधारने का प्रयास करें ताकि यह सुधार उनके साथ जीवनपर्यंत रहेगा।

मात्राओं की गलती कम करने में मददगार है पढ़ना

मात्राओं की गलतियों को कम करने में सबसे ज़्यादा मदद ऐसी पत्र-पत्रिकाओं और लेखों को पढ़ने से मिल सकती है जो अच्छी हिंदी में लिखे जाते हैं। यानी जिनमें हिंदी भाषा की वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियाँ कम होती हैं। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को यह सुझाव दिया जाए कि वे अधिक से अधिक किताबें और समाचार-पत्र इत्यादि पढ़ने का शौक रखें जो शुद्ध लेखन में लिखी जाती हैं, जैसे साहित्यिक पत्र व पत्रिकाएँ इत्यादि।

अगर बात करें कि मात्राओं की गलती को कैसे सुधारा जा सकता है तो बेहतर होगा कि एक बार फिर से मात्राओं पर गौर किया जाए। स्वरों की मात्राओं के प्रतीकों को समझने का प्रयास किया जाए और किसी वर्ण में उसके लगने के बाद आवाज़ में होने वाले बदलाव को समझा जाए और उसी के अनुसार अपने लिखे हुए को एक बार सरसरी निगाह से देखा जाए। इसके अलावा रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले ऐसे कार्यक्रम भी मददगार साबित हो सकते हैं जो खेल और कहानियों के माध्यम से शुद्ध उच्चारण और लेखन सिखाते हैं। यदि शिक्षकों को इसकी जानकारी हो तो वे समय पर अपने विद्यार्थियों को इससे अवगत करा सकते हैं।

संदर्भ

मानक हिंदी व्याकरण. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

शर्मा, रामविलास. 2004. *भाषा और समाज*. राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.

——. 2007. *भारत की भाषा समस्या*. राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली.

सिंह, दिलीप. 2000. *भाषा का संसार*. वाणी प्रकाशन. नयी दिल्ली.

——. 2002. *भाषा साहित्य और संस्कृति शिक्षण*. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

Chapters- PS-July2016.indd 35 22-08-2017 AM 10:01:01